उल्लेखनीय है कि सर्वप्रथम कांसे की वस्तुओं की जानकारी तीसरी शताब्दी ई. पू. में चीन के उत्तर-पश्चिम स्थल से प्राप्त होती है। यद्यपि कांसे की वस्तुएँ एवं कांसे की ढलाई के प्रमाण उत्तरी चीन के हेनान के 'ऐर्लीतोउ' नामक स्थान से प्राप्त हुए हैं। इसके उत्खनन कार्य की शुरुआत 1959 ई. में की गयी। ऐर्लीतोउ संस्कृति का प्रस्फुटन लगभग 1900-1500 ई. में हुआ। इस संस्कृति को चीन के कांस्य युग के उदय का ऊषा-काल कहा जाता है। यहाँ से घरों व मिट्टी की बनी दीवारों से घिरी बस्तियाँ और शवाधान के प्रमाण मिलते हैं। इसके अलावा ऐर्लीगांग व अन्यांग से भी कांस्ययुगीन सभ्यता के महत्वपूर्ण प्रमाण मिले हैं। उत्खनित क्षेत्रों से कांस्य को ढालकर भारी गोल बर्तनों का निर्माण करने का प्रमाण प्राप्त हुआ है। चीनी कांसे का प्रयोग वजन व माप यन्त्र, संगीत-वाद्ययन्त्र, गहने, घोड़े व रथ को बनाने के उपकरण और दैनिक जीवन से सम्बन्धित विभिन्न वस्तुओं को बनाने में भी किया जाता था।

18वीं सदी ई. पू. से तीसरी सदी ई. पू. के मध्य शांग तथा चाऊ राजवंशों द्वारा धातु शिल्प में विशेष सफलता प्राप्त की गयी। प्राचीन काल में चीन में निर्मित कांस्य के विविध पात्र वास्तव में आश्चर्यचकित करते हैं। कांस्य के पात्र पर की जाने वाली पॉलिश के उपरान्त यह चमकीले सुनहरे रंग की आभा बिखेरता है, जो देखने में बेहद खूबसूरत लगता है। इसके अतिरिक्त कांस्य का प्रयोग हथियार बनाने के रूप में भी किया गया यथा-कुल्हाड़ी, बरछी, छेनी, आरी, वसूला, मछली हुक तथा कृषि उपकरण आदि। खाना पकाने के बर्तन, जल एवं मदिरा रखने के पात्र इत्यादि दैनिक जीवन से सम्बन्धित वस्तुओं की सुन्दरता ने विदेशियों का ध्यान भी सर्वाधिक अपनी ओर आकर्षित किया है। अतएव उत्तरी चीन की पीली नदी और उसकी सहायक नदी क्षेत्रों में विस्तृत चीनी सभ्यता के पुरातन अवशेषों का विगत कुछ दशकों से चल रहे उत्खनन कार्य ने नये तथा अन्य महत्वपूर्ण स्थलों के अस्तित्व को भी प्रकट कर रही है। ये अन्य स्थल उत्तर एवं उत्तर-पश्चिमी चीन के विविध हिस्सों में स्थित हैं। इसके साथ ही ये स्थल मध्य चीन में दक्षिण तक यांगजी नदी क्षेत्रों तक विस्तृत हैं।

उदय एवं विकास क्रम का ऐतिहासिक स्त्रोत (The Historical Source of Rise and Development)

प्राचीन चीन में चीनी साहित्य एवं मिथ्य-कथाओं के आधार पर तीन अधिपतियों (फू-शी, नुई-कुआ एवं शेन-नुंग) तथा पाँच सम्राट को चीन का सर्वप्रथम शासक माना जाता है। उन्हें चीनी संस्कृति में काफी सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। परन्तु चीनी कथाओं में इन शासकों की ऐतिहासिक प्रमाणिकता अन्वेषण का विषय है। चीनी कथाओं में अधिपतियों का स्थान तथा उनकी शक्तियाँ देवताओं के तुल्य बतायी गयी हैं और सम्राटों को महात्मा एवं शक्तिशाली मनुष्य माना गया है। कथाओं के अनुसार इन शासकों ने मानव उत्थान के लिए सराहनीय कार्य किये। इनके समय में 'इतिहास लेखक' नियुक्त करने की प्रथा की शुरुआत की गयी, भूमि को 'चिंग-तिएन' पद्धति के अनुसार बाँटा गया, ईंटों एवं बैलगाड़ी की खोज की गयी। साथ ही पंचांग को परिष्कृत किया गया और तिथि-गणना में षष्ठिक पद्धति प्रारम्भ की गयी। पाँच सम्राटों में अन्तिम सम्राट 'शुन' था। इन सम्राटों ने चीनी सभ्यता को विकसित किया।

शिया या जिया (Xia) **राजवंश**—पाँच सम्राटों में से अन्तिम सम्राट 'शुन' ने अपनी गद्दी 'युई' नामक व्यक्ति को सौंपी। युई ने सम्राट पद को वंशानुगत करके शिया राजवंश (1989 ई. पू.- 1557 ई. पू. या 2205 ई. पू.-1766 ई. पू.) की नींव डाली। यह चीन का पहला राजवंश था जिसका उद्धरण 'इतिहास का शास्त्र' एवं 'बांस कथाएँ', जैसे चीनी इतिहास ग्रन्थों में मिलता है। वर्णित कथाओं के अनुसार, युई को चीन में कृषि शुरू करने का श्रेय दिया जाता है। इसके द्वारा भूमि के व्यवस्थित वितरण एवं अभिलेख प्रणाली को आरम्भ किया गया। युई ने ईश्वर की इच्छा को सर्वोपरि शक्ति के रूप में मान्यता दी। इस व्यवस्था को 'टियेन' बोला गया। इस राजवंश का अठारहवाँ शासक 'की' हुआ। इसका शासन बर्बरता एवं आततायी पर आधारित था। 'की' के व्यवहार से दुःखी होकर कुछ लोगों ने थांग (टंग) नामक व्यक्ति के नेतृत्व में विद्रोह करके 'की' को पदस्थ कर दिया और सत्ता पर अधिकार कर लिया।

शांग राजवंश—थांग (टंग) ने शांग राजवंश की स्थापना की। पुरातत्ववेत्ता के अनुसार शांग राजवंश चीन का सबसे प्राचीन राजवंश था। इस राजवंश ने 1766 ई. पू. से 1122 ई. पू. तक शासन किया। इनका राज्य हुआंग हो (पीली नदी) के क्षेत्र में स्थित था। चीनी इतिहास में शांग काल को 'थिन काल' नाम से भी पुकारा गया। चीन के हेनान प्रान्त के सुदूर उत्तरी क्षेत्र में अवस्थित यिनशु पुरातत्व स्थल को शांग वंश की

Scanned with OKEN Scanner

राजधानी का स्थान माना जाता है। इस स्थल पर ग्यारह शाही मकबरे प्राप्त हुए हैं। इसके साथ ही उत्खनन के पश्चात् महलों-मन्दिरों के खण्डहर भी साक्ष्य रूप में मिले हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ से हजारों कांसे, हरिताश्म, पत्थर, हड्डी एवं चिकनी मिट्टी की वस्तुएँ भी प्राप्त हुई हैं, जो काफी विकसित अवस्था में होने का प्रमाण देती हैं। पुरातत्वविदों द्वारा इसे कांस्य-युग की संज्ञा दी गयी है। चीन के साहित्यिक प्रमाणों में शांग राजवंश से सम्बन्धित अनेक राजाओं के नाम मिलते हैं, फिर भी विस्तृत रूप से ज्ञान इस राजवंश के अन्तिम शासक 'चाऊ सिन' के बारे में ही प्राप्त होता है। चाऊ सिन वीर एवं कुशल शासक होने के साथ काफी क्रूर भी था। इसके दरबार में कामुक नृत्यों का आयोजन होता था और बगीचों में स्त्री-पुरुष नग्न क्रीड़ा किया करते थे। अन्ततः इस क्रूर एवं भ्रष्ट शासन से तंग होकर चाऊ नामक चीन के पश्चिमी राज्य के लोगों ने साम्राज्य के खिलाफ विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह का नेतृत्व 'वेन वांग' नामक व्यक्ति द्वारा किया गया। अन्त में वेन वांग के पुत्र वु वांग ने चाऊ सिन को हराकर शांग वंश का अन्त कर दिया। हालांकि अपने अन्तिम दिनों में शांग राज्य काफी विस्तृत हो चुका था। इसके अन्तर्गत होपेई, अन्हुई एवं शांतुंग के उत्तरी हिस्से जुड़े हुए थे। शांग वंश के शासकों ने अपने समय में उच्च स्तर की संस्कृति का विकास किया। शांग वंश द्वारा सुविज्ञ लिखावट का विकास किया गया तथा उनके द्वारा छोड़े गये लिखित प्रलेख के माध्यम से उनकी रोजाना की दिनचर्या के प्रति समझ के बारे में पता चलता है। ऐसे में यह कहा जा सकता है कि वास्तविक रूप से चीन का इतिहास शांग वंश के काल से आरम्भ हुआ।

चाऊ राजवंश—चाऊ वंश के शासकों द्वारा 1122 ई. पू. से 225 ई. पू. अथवा 1046 ई. पू. से 221 ई. पू. तक चीन पर शासन स्थापित किया गया। इस वंश के शासकों ने चीन में लम्बे समय तक शासन किया। किन्तु धीरे-धीरे उनकी सैनिक शक्ति एवं प्रशासनिक क्षमता कमजोर होती गयी। परम्परागत रूप से, चाऊ वंश को पश्चिमी या शाही चाऊ (1046 ई. पू.-771 ई. पू.) और 771 ई. पू. के बाद के युग को पूर्वी चाऊ राजवंश की संज्ञा दी जाती है। पश्चिमी चाऊ काल के अन्तर्गत शांग वंश को पराजित कर चाऊ वंश की नींव रखी गयी। परन्तु इतने बड़े राज्य को व्यवस्थित करने के लिए प्रथम चाऊ शासक 'वु वांग' ने अपनी राजधानी पश्चिम में वेई की घाटी में चंगान (शियान-फू) के निकट स्थापित की। बाकी राज्य उसने अपने भाई-बन्धुओं के नेतृत्व में जागीरों में बाँट दिया। प्रत्येक उपराज्य की अलग-अलग राजधानी थी और वे सभी 'वू वांग' के अधीनस्थ थे। इनके शासक नाममात्र के लिए वू वांग को परमाधीश्वर मानते थे। कालान्तर में सत्ता की लोलुपता से उपराज्य आपस में ही संघर्षरत हो उठे। 771 ई. में केन्द्रीय सत्ता का अन्त हो गया और प्रत्येक राज्य खण्डित रूप से चलने लगा। इस नये काल को 'पूर्वी चाऊ काल' कहा जाता है जिसके स्वयं दो भाग किये जाते हैं, यथा—बसन्त एवं शरद काल तथा 'झगड़ते राज्यों का काल'। बसन्त एवं शरद काल पूर्वी चाऊ काल का पहला भाग था जो तकरीबन 771 ई. पू. से 481 ई. पू. तक चलता रहा। झगड़ते राज्यों का काल पूर्वी चाऊ काल का दूसरा भाग कहलाता था। ये 403 ई. पू. से 221 ई. पू. तक चला। इस प्रकार, पूर्वी चाऊ काल में चीनी राष्ट्र की एकता खण्डित हो गयी थी। इस माहौल में अन्ततः चिन नरेशों को खास सफलता मिली। इन्होंने चाऊ नरेश को पराजित कर एक नये चिन राजवंश की स्थापना की।

उल्लेखनीय है कि चाऊ वंश के शासकों ने शांग वंशीय संस्कृति के अच्छे तत्वों को सुरक्षित रखा। यह युग चीनी सभ्यता का पहला 'स्वर्ण-काल' कहा जाता है। चाऊ काल में ही चीन में लोहे का उपयोग प्रारम्भ हुआ। साथ ही इस काल में चीन की प्राचीन चित्रलिपि को विकसित करके एक आधुनिक रूप प्रदान किया गया। यह पूर्वी चाऊ राजकाल के उस हिस्से में हुआ जिसे झगड़ते राज्यों का काल बोला जाता है। इस समय चीन में एक स्वतन्त्रता का माहौल भी पनपा जिसके अन्तर्गत बहुत-सी नई विचारधाराओं का विकास हुआ। इस काल में ही चीन में कन्फ्यूशियस और लाओत्से जैसे धार्मिक विचारकों का उद्भव हुआ। इन्होंने आगे चलकर चीनी राजनीति और संस्कृति पर काफी गहरे प्रभाव छोड़े। इसके साथ ही चीन में विद्या का गहन रूप से विकास हुआ एवं दो मुख्य विचारधाराओं का जन्म हुआ यथा—यिन-यांग व कानूनवाद। यिन-यांग ने चीनीवासियों में भविष्य के प्रति आशा का संचार किया वहीं कानूनवाद ने राज्य को ठोस राजनीतिक आधार दिया।

चिन वंश—चिन, चु एवं चि ने चीन पर तीसरी शताब्दी ई. पू. में शासन किया। 225 ई. पू. -203 ई. पू. तक चीन में चिन, चु एवं चि तीन बड़े राज्य थे। चिन (किन) वंश के काल को चीन में प्रगति व समृद्धि

Scanned with OKEN Scanner